पाठ-22 रामधारी सिंह 'दिनकर'

मुख्य विषय

दिनकर रचित 'परशुराम का उपदेश' शीर्षक कविता राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के समय उत्पन्न हुए मानसिक दबाव में लिखी गई।वीरता और देशप्रेम दिनकर के काव्य का मूल स्वर है। प्रत्येक पंक्ति प्रेरणा और उमंग से परिपूर्ण है। इस कविता का मूलभाव है - अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाना मानव का धर्म है। अत्याचार और अन्याय सहना कायरों का काम है। मानव को प्रकृति से अनेक नैसर्गिक शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनकी पहचान हो जाने पर उसकी भुजाओं में अत्यधिक बल आ जाता है कि एक-एक वीर सैकड़ों को परास्त कर पाता है। अब समय आ गया है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति को पहचाने और एक जुट होकर शत्रु पर टूट पड़े।

मुख्य विषेशताएं

अंश - 1

- भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से कवि देशवासियों में उमंग और उत्साह भरते हुए वीरता का भाव जगाना चाहता है।
- कवि कहता है कि मानव में एक विशेष प्रकार की अग्नि है, जो शक्ति रूप में छिपी पड़ी है। वही उसके जीवन का सत्य है। कवि उसी सत्य को खोजने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है। सत्य वहीं है, जहाँ जीवन में हलचल है अर्थात् जीवन में गतिशीलता और क्रियाशीलता है। यहाँ क्रियाशीलता जीवन को गति देती है। किंतु यह क्रियाशीलता एक नियमित ढर्रे पर चलने वाली क्रिया नहीं बल्कि नित नई घटनाओं, नए विचारों से प्रेरित होकर नए कार्यों की ओर बढ़ने वाली क्रियाशीलता है। इसी को कवि ने हलचल कहा है।
- कवि के अनुसार ऐसी हलचल के बिना कोई ज़िंदगी नहीं। इसी प्रकार वह जीवन भी व्यर्थ है जिसमें 'दाहकता और गर्जन' न हो। यहाँ 'गर्जन' का अर्थ दो विरोधी परिस्थितियों या विचारों की टकराहट से हृदय में उत्पन्न दाहकता या जलन है।
- यहाँ कवि उसी सत्य रूपी शक्ति को ढूँढ़ लाने के लिए प्रेरित करता हुआ कहता है कि जिन लोगों ने झूठ रूपी राख से सत्य रूपी अग्निशक्ति को ढक दिया है। भारत-चीनी भाई-भाई के नारे को झूठा कहते हुए कवि का आक्रोश व्यक्त हुआ है। इस नारे की आड़ में चीन हमारे देश पर घात कर रहा है। उन पर विश्वास मत करो, वे झूठे हैं। ऐ देशवासियो! तुम सत्य को पहचानो और अपने जीवन की दिशा को बदलो।

अंश - 2

- कवि का विचार है कि अहिंसा का मार्ग हमें योग और वैराग्य की ओर ले जाता है। इसलिए वह देशवासियों से कहता है- तुम वैराग्य छोड़ो, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अर्थात् अहिंसा का मार्ग छोड़कर, अपनी शक्ति के अनुरूप तलवार और बंदूकें उठाओ और कठिन परिस्थितियों में भी अपना मार्ग खोजो, दुर्गम सीमाओं को पार करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। ऐ देशवासियो!, योगी नहीं, वरन् विजयी के समान जीना सीखो।

अंश - 3

- कवि देशवासियों को संबोधित करते हुए कहता है कि व्यक्ति को अपनी शान, मान और आन नहीं छोड़नी चाहिए। भले ही देश की रक्षा करते हुए अपना सिर क्यों न कटाना पड़े। वह कहता है कि अन्याय और अनीति के आगे कभी मत झुको, भले ही आकाश क्यों न फट पड़े अर्थात् कितनी भी भारी मुसीबत का पहाड़ तुम पर क्यों न टूटे, मगर अन्याय की बात मत मानो। जीवन में मौत तो एक बार ही आती है-यमराज एक बार ही गर्दन पकड़ कर ले जाते हैं। अतः, जब एक बार ही मरना है तो शान से, निडर होकर मृत्यु की ओर स्वयं बढ़ो-अर्थात् वीरतापूर्वक मृत्यु का वरण करो।

अंश - 4

- सभी मानव स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यह उनकी सीखी हुई आदत नहीं बल्कि मौलिक प्रवृत्ति है। संसार में वही जाति स्वतंत्र रह पाती है, जिसमें स्वाभिमान है, जो बिना झुके मुसीबतों की चोट सह लेती है। इसलिए ऐ देशवासियो! तुम वीरता छोड़कर दूसरों का पैर मत पकड़ो अर्थात् किसी की दासता मत स्वीकारो। कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

अंश - 5

- कवि कहता है कि वह देश जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जागे, जहाँ छातियाँ संगीनों के वारों से डर जाएँ, जहाँ के नागरिक खून बहाने के बदले आँसू बहाएँ, वे कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते। कवि आह्वान करता कि शेर के अयाल (गर्दन के बाल) पकड़ने का साहस रखो, आँधियों पर सवारी करने का हौसला दिखाओ और किरिचों (घोंपने वाली तलवार या कटार) को अपनी खाल से मढ़ने की निर्भीकता का प्रदर्शन करो। अर्थ हुआ कि साहस, हौसला, चुस्ती-फुर्ती दिखाने के साथ-साथ अपने शरीर का बलिदान करने वाली निर्भीकता ही वीरत्व की पहचान है। जिस देश में ऐसे वीर होंगे वही देश स्वाधीन रह सकता है।
- आशय है कि ऐ देशवासियो, तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रु सेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में तुम भी क्षत-विक्षत हो सकते हो, मगर इसकी बिल्कुल भी परवाह न करो। स्वाधीन रहने की कीमत मृत्यु भी हो तो उसका वरण करो।

अंश - 6

- कवि वीरों का आह्वान करता हुआ कहता है कि वीर की वाणी में ओज रूपी अग्नि की शक्ति प्रतिध्वनित होनी चाहिए। यदि वाणी में ओज नहीं तो उसकी वंदना व्यर्थ है-अर्थात् उसे वीर कहना शोभा नहीं देता। विनम्रता व्यक्ति का गुण माना जाता है, किंतु कवि के अनुसार विनम्रता के साथ-साथ वीरता अनिवार्य है। केवल विनम्रता के साथ बोलते हुए व्यक्ति की वाणी रुदन करती-सी प्रतीत होती है।
- वीर व्यक्ति वही सुंदर लगता है जिसके मस्तक पर शत्रु-प्रहार के चिह्न हों। यह चिह्न उसके मस्तक पर रक्त-रूपी चंदन के समान शोभायमान हो। ऐसे ही वीरों का अभिनंदन होता है। शक्ति की देवी दुर्गा भी ऐसे ही वीरों का अभिनंदन करती है।

शिल्प-सौंदर्य

- दिनकर अपने विशिष्ट काव्य-प्रयोगों से भाषा को लाक्षणिक बनाने में सिद्घहस्त हैं। वे ऐसे प्रयोगों की झड़ी लगा देते हैं, जैसे - सत्य का राख में सना होना, बाँहों की विभा सँभालना, चट्टानों की छाती से दूध निकालना, चंद्रमाओं को पकड़ कर निचोड़ना आदि।

- दिनकर की कविताओं में भाषा का सुंदर प्रयोग मिलता है। भावानुरूप भाषा उनके संकेतों पर चलती दिखाई देती है। भाषा के तत्सम रूप के प्रयोग में वे अग्रणी दिखाई देते हैं; जैसे-ऋत, दाहक, गर्जन, वर्जन, विभा, शिला, पीयूष, व्योम आदि।
- कविता की लयात्मकता और गत्यात्मकता सराहनीय है, जिससे कविता के वाचन में अद्भुत आनंद आता है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

अपना मूल्यांकन कीजिए

- दिनकर की राष्ट्रीय चेतना पर टिपण्णी लिखिए।
- आज के सन्दर्भ में इस कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
- इस कविता के शिल्पगत वैशिष्ट्य को प्रस्तुत कीजिए।